सच्ची स्वतंत्रता

बख्त सिंह

परिचय

परमेश्वर ने अपने मित्र अब्राम को बतलाया, कि उसका वंश पराये देश में रहेगा, ४०० वर्षों तक दासत्व में रहेगा, और उसके बाद वापस अपने देश आयेगा (उत्पत्ति १५:१३-१६)। उनके देश में अकाल पड़ने के कारण याकूब और उसकी सन्तान मिस्त्र में गये। वहाँ वे बढ़ते गये और महान बन गये। मिस्त्र के राजा फिरौन ने इस बात को जान लिया और उन्हें दास बना लिया। उनसे बहुत कठिन परिश्रम करवाया गया। तब उन्होंने यहोबा की दुहाई दी और उसने अब्राम को दी गई अपनी प्रतिज्ञा को स्मरण किया, उसने अपने सेवक मूसा को भेजा कि वह इस्त्राएल की सन्तान को मिस्त्र की बन्धुवाई से छड़ा लाये। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसने सामर्थी आश्चर्य कर्मो तथा विपत्तियों के द्वारा मिस्त्रियों को दण्ड दिया और इस्त्राएल की सन्तान को छुड़ा लिया। तब इस्त्राएल मिस्त्र में बाहर आया और उसने प्रतिज्ञा के देश की ओर चलना प्रारम्भ किया। हम परमेश्वर के वचन में उनकी प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा के बारे में पढ़ते हैं, और हम यह पाते हैं, कि यद्यपि वे मिस्त्र से बाहर आ गये थे, मिस्त्री उनके बाहर नहीं निकला था! उनमें हमेशा पुराने जीवन, बन्धुवाई के जीवन की ओर वापस लौटने का झुकाव था। हममें भी यही प्रकृति रहती है। यद्यपि प्रभु ने हमारे लिये हर उपाय किया है, कि हम सभी बन्धनों से मुक्त रहें, परन्तु हमसें बन्धुवाई में फिर से वापस जाने की ओर किसी न किसी प्रकार का झुकाव रहता है। इस्त्राएल की यात्राओं से हम बहुमूल्य पाठ सीखते हैं।

परमेश्वर के लोगों की मिस्त्रसे कनान तक की यात्रा का अध्ययन करने में हम यह समझते हैं कि मिस्त्र, बन्धुवाई, दासत्व, अन्धकार और नाश के बारे में बताता है। जब हम परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा बचाये जाते है, हम हर बन्धुवाई और दण्ड से छुड़ाये जाते हैं,

और प्रभु यह चाहा है, कि हम उसकी भरपूरी तक पहुँचे। कनान देश, भरपूरी को दर्शाता है, और जब तक हम मार्ग में भिन्न भिन्न प्रकार के क्लेषों और परिक्षाओं पर विजय न पायें, हम उस भरपूरी का आनन्द नहीं ले पायेंगे। नये जीवन का अनुभव केवल हमारे विश्वास पर निर्भर करता है, और जिस क्षण हम प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर पूर्ण किये गये काम पर विश्वास करते हैं, हमें क्षमा प्रदान की जाती है; परन्तु हमारे द्वारा परमेश्वर की भरपूरी का आनन्द उठाया जाना हमारी आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता पर निर्भर करता है, और इसीलिये हमें जंगल की यात्रा से होकर जाना पड़ता है, जिससे यह परखा जाये कि हम में जीवित विश्वास है, या नहीं।

हम कदम ब कदम उस यात्रा से सीखे जा सकने वाले पाठों को सीख सकते हैं, और तब हम जानते हैं, कि इस्त्राएली लोक कैसे सिनै पर्वत तक आये, और उन्हें केसे और किस उद्देश्य से परमेश्वर की व्यवस्था दी गई।

व्यवस्था का अर्थ

आइये हम परमेश्वर के वचन से देखें कि व्यवस्था से क्या तात्पर्य है।

“इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची (यूहन्ना १:१७)।”

“इसलिये कि हर एक विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है” (रोमियों १०:४)।

“क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, चलता है, वह इसी कारण जीवित रहेगा” (रोमियों १०:६)।

मूसा के द्वारा इस्त्राएल की सन्तान को आज्ञाओं, नियमों, पर्वो और बलिदानों के रुप में जो कुछ भी दर्शाया गया, व्यवस्था कही जाती है; और इसके द्वारा परमेश्वर का यह दिखाने का विचार था कि जैसी धार्मिकता वह मनुष्य से चाहता है, उसका अर्थ क्या है, और जिसे कोई भी मनुष्य अपने स्वयं क प्रयास से नहीं प्राप्त कर सकता। फिर भी सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट इस बात पर जोर देते हैं, कि दस आज्ञाएँ व्यवस्था में सम्मिलित नहीं की गई थीं, और वे स्वयं में अलग भाग बनाती हैं। इस प्रकार से वे तर्क करते हैं, कि व्यवस्था का तो अन्त हो चुका है, परन्तु दस आज्ञाएँ अभी भी बनी हुइ है। वे रीति-रस्म की व्यवस्था और नैतिक व्यवस्था में अन्तर मानते हैं, और कहते है कि रीति रिवाज की व्यवस्था का अन्त हो चुका है, परन्तु नैतिक व्यवस्था अभी भी है। ऐसा भेद परमेश्वर के वचन में कहीं भी नहीं दिया गया है।

जब प्रभु यीशु मसीह ने एक व्यवस्थापक की जोउनसे प्रश्न पूछने आया था, उत्तर दिया तब उन्होंने यह स्पष्ट किया कि दस आज्ञाएँ व्यवस्था का ही भाग है। आइये, हम मत्ती २२:३४-४० देखें।

"जब फरीसियों ने सुना, कि उसने सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए। और उन में से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये उस से पूछा। हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?

"यीशु ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।"

फरीसियों और सदूकियों को उत्तर देने में प्रभु, पुराने नियम को दो समूहों में बाँटते हैं, "व्यवस्था" और "भविष्यद्वक्ता"। फिर लूका २४:२७ में लिखा है, "तब उसने मूसा सो और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया।" इन्दीं दो भागों को हमारा प्रभु, "मूसा"और "सब भविष्यद्वक्ताओं" कहता है। इसलिये यह स्पष्ट है, कि सिनै पर्वत पर परमेश्वर ने मूसर से जो कुछ भी कहा, जैसे कि दस आज्ञाएँ, प्रतिदिन के जीवन के लिये भिन्न भिन्न नियम तम्बु में चढ़ाई गई बलियों के विषय में और यहोबा के पर्वों के बारे में, ये सब मिलकर "व्यवस्था" का निर्माण करते हैं; इसलिये दस आज्ञाओं को खतने से या बलिदानों से या जो कुछ व्यवस्था में सम्मिलित किया गया था उस से अलग नहीं किया जा सकता।

जो प्रश्न व्यवस्थापक ने प्रभु यीशु मसीह से पूछा उसके शब्दों पर सतर्कता पूर्वक ध्यान दीजिये। "हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" प्रभु के उत्तर की ओर ध्यान दीजिये "यीशु ने उससे कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।" व्यवस्थाविवरण ६:५ के अनुसार,

“तू अपने परमेश्वर यहोबा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।” और लैव्यव्यवस्था १९:१८ के अनुसार, “पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना; मैं यहोबा हूँ”; हम कह सकते हैं, कि हमारे प्रभु ने “व्यवस्था” शब्द में दस आज्ञाओं के साथ साथ सभी नियमों को सम्मिलित किया।

पौलुस प्रेरित व्यवस्था के विषय में बोलते समय उसे “व्यवस्था की पुस्तक” नाम से सम्बोधित करता है। गलतियों ३:१० में लिखा है, “सो जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब स्त्राप के आधीन हैं, क्योंकि लिखा है, कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह स्त्रापित है।” वह दिनों, महीनों, समयों, और वर्षों के मानने की और भी संकेत करता है। गलतियों ४:१०, “तुम दिनों और महीनों और नियम समयों और वर्षों को मानते हो।” इस प्रकार से पौलुस रीतिरिवाज वाली व्यवस्था तथा नैतिक व्यवस्था के बीच भेद नहीं करता है।

हम निर्गमन के १९ से २२ अध्याय में फिर पढ़ते हैं, कि मूसा पर्वत पर परमेश्वर यहोबा की आज्ञाएँ प्राप्त करने गया, और उसे बहुत सी बातों के बारे में चिताया गया। निर्गमन २०:१-१६ पदों में हमें दस आज्ञाएँ मितली हैं, ओर फिर दूसरे भिन्न भिन्न नियम और व्यवस्था हमें मिलती हैं। इसलिये दस आज्ञाएँ व्यवस्था का भाग है।

सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट हमारा ध्यान निर्गमन २०:१० की ओर अकर्षित करते हैं, “परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोबा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भाँति का कामकाज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।” वे कहते हैं, “इस आज्ञा के बारे में क्या? क्या आप दस आज्ञाएं मानते और सातवें दिन का पालन करते हैं? अपनी मुक्ति के लिये आपको शनिवार के दिन को सातवाँ दिन मानकर उसका पालन करना चाहिये। यदि नहीं

तो आप परमेश्वर की आज्ञाओं का उलंघन कर रहें हैं, और परमेश्वर के न्याय के आधीन आ रहें है। “वे कहते हैं, कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने सातवें दिन का पालन किया और उसे बदला नहीं।” वे ऐसे सुसंस्कृत झूठे हैं; वे अपनी बुरी और धोखेबाजी की शिक्षा द्वारा लोगों का गलत मार्गदर्शन करते हैं, और उन्हें गुमराह करते हैं, और उन्हें बन्धुवाई में ले आते हैं। लोगों को बिना बताये कि वे कौन हैं, बड़ी चालाकी और दुष्टतापूर्वक वे अपनी असलियत को छिपा लेते हैं, और लोगों को लुभाते हैं कि उनके वाइस-आफ-प्रोफेसी कोर्स में नाम लिखा लें, जो कि पूना से भेजा जानेवाला पत्र व्यवहार का कोर्स हैं। छपे हुये पाठ हर सप्ताह प्राप्त होते हैं। बहुत से लोग इस पाठ्यक्रम में रुचि लेने लगते हैं जिसमें कि प्रारम्भ में कुछ बाइबल अध्ययन के पाठ होते हैं, परन्तु उनका प्रमुख उद्देश्य लोगों को सातवाँ दिन मनाने के लिये प्रभावित करना होता है।

व्यवस्था का उद्देश्य

वह उद्देश्य देखिये जिसके लिये परमेश्वर यहोबा ने व्यवस्था दी। पहला, उसे इसलिये दिया गया कि लोग परमेश्वर के अनुसार पाप की परिभाषा क्या है, समझ सके। हम रोमियों ३:२० में पढ़ते हैं, “क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।”

दूसरा उद्देश्य, व्यवस्था हमें परमेश्वर यहोबा की पवित्रता को समझने के लिये दी गई। “हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती हैं उन्हीं से कहती है, जो व्यव्यथ के आधीन हैं; इसलिये कि हर एक मुँह बन्द किया जाये, और सारा संसार परमश्वेर के दण्ड के योग्य ठहरे (रोमियों ३:१९)। व्यवस्था वहाँ थी, और वे सत्य और झूठ को पहिचानते थे, परन्तु जब वे प्रयास करते थे कि पाप न करे, वे असफल होते थे और उन्हे स्वीकार करना पड़ता था कि एक भी व्यक्ति में परमेश्वर की आज्ञा मानते अथवा उसके नियमों का

पालन करने की सामर्थ नहीं है, इस प्रकार से सारी दुनियाँ दोषी बन गई, और परमेश्वर के सामने हर मुँह बन्द कर दिया गया।

मैं एक नगर की सड़कों से सरल, निर्दोष, शर्मीला चेहरा लिये हुये, यह कहते हुये चल सकता हूँ कि मैं एक अच्छा आदमी हूं; किसी ने मुझे झगड़ते अथवा झूठ बोलते नहीं सुना है, किसी ने मुझे चोरी करते नहीं देखा है, और लोग मुझ पर विश्वास कर सकते हैं। परन्तु जब मैं परमेश्वर के सामने खड़े होकर ऐसा कहता हूँ; परमेश्वर का हाथ मेरा मुह बन्द कर देगा और वह मुझ से कहेगा, "तुम ऐसा कहने का साहस कैसे कर सकते हो। अपनी ओर देखो तथा मेरी पवित्रता के स्तर की ओर देखो।" मैं मनुष्यों को धोखा दे सकता हूँ, परन्तु परमेश्वर को नहीं। इस प्रकार व्यवस्था मुझे परमेश्वर की पवित्रता की एक झलक थी। और परमेश्वर कहता है, "उस दृश्य से अपनी तुलना करो, अपने हाँथो और पैरों की ओर देखो और कहो की तुम पवित्र हो या नहीं, और तब मेरी आग के पास आओ।" मूसा को छोड़कर और किसी को भी उस पर्वत तक जाने की अनुमति नहीं थी। इस प्रकार से हर व्यक्ति का मुँह बन्द किया गया।

तीसरा, व्यवस्था हमें हमारी सहायता के लिये दी गई ताकि हम जाने कि पाप कितना भयानक है। "तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे" (रोमियो ६:१३)। व्यवस्था इसलिये दी गई की पाप को और अधिक पापमय दर्शाये। दूसरे शब्दों में, हमें यह दिखाने के लिये व्यवस्था दी गई की पाप कितना खतरानाक, विनाशकारी और भयानक है।

कई शताब्दियों पूर्व लोगों को टयूबरकुलोसिस बेसिली (टी.बी.के.किटाणू) का कोई ज्ञान नहीं था, क्योंकि वे खाली आँखों के लिये अदृश्य थे। जब कोई व्यक्ति अधिक

खाँसता था तो वे सोचते थे कि उसे दुष्ट आत्मा ने पकड़ रखा है, और उसे दूर करने के लिये जादुई साधन उपयोग में लाते थे। परन्तु सूक्ष्मदर्शी यंत्रों के अविष्कार के साथ, जिसके द्वारा छोटे से छोटे किटाणू भी देखे जाते है, लोगों को बेसिली के कारण होने वाले विनाश और क्षति के विरुद्ध चेतावनी दी गई है। जो लोग पहले निश्चिन्त रहे होंगे वे अब बहुत अधिक सतर्क हो गये हैं, और वे अब जानबूझकर ऐसे व्यक्ति के पास जाने से अपने को बचाते है, जो इस रोग से ग्रस्त है।

हम पाप के विषय में बहुत ही हल्के रुप में सोचते हैं और कहते है, "ओह, वह तो केवल एक विचार है, केवल एक इच्छा, एक भावना, केवल मित्रता, केवल लगाव, केवल थोड़ा सा सम्बन्ध है अधिक कुछ नहीं।" परन्तु प्रभु हमें बताता हैं, एक छोटा सा विचार कितना भयानक है! केवल एक विचार के द्वारा घरानों मे और लोगों के जीवनों में कितना अधिक विनाश लाया गया है! एक भावना के कारण कितना दु:ख, एक अन्धे कदम के कारण कितना अधिक अन्धकार! व्यवस्था इसी उद्देश्य से दी गई थी, ताकि पाप को और अधिक पापमय दिखा सके।

चौथा, व्यवस्था हमें प्रभु यीशु मसीह के पास लानें के लिये दी गई थी। हम गलतियों ३:२४ में पढ़ते है, "इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने को हमारा शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।" व्यवस्था में कोई उद्धार नहीं है। वह किसी व्यक्ति को धर्मी नहीं बना सकती और उसे परमेश्वर के समीप नहीं ला सकती। व्यवस्था, अर्थात सारे चढ़ाये हुये बलिदान, खतना, और आज्ञाएँ लोगों को एक स्कूली शिक्षक की नाई प्रभु यीशु मसीह के लिये तैय्यार करती और शिक्षा देती थी, और जब प्रभु यीशु मसीह आये, तब स्कूली शिक्षक की कोई आवश्यकता नहीं रही। "क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।" (रोमियों १०:४)। मसीह व्यवस्था का अन्त है! परमेश्वर का वचनप इस विषय में कितना स्पष्ट है कि जब प्रभु यीशु मसीह आये

उन्होंने व्यवस्था का अन्त कर दिया। अब हम खतने के अन्तर्गत नहीं हैं, साँतवे दिन और बलिदानों के आधीन नहीं हैं, हम अनुग्रह के आधीन आ गये हैं। हम कुछ करने के द्वारा नहीं परन्तु विश्वास के द्वारा धर्मी बनते हैं। परमेश्वर के वचन को बदलने के कारण ये सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट परमेश्वर के न्याय के अन्दर आते हैं।

अनुग्रह से गिरे हुये

मसीह-युग के प्रारम्भ के दिनों में लोगों को सिखाया जाता था कि जब तक उनका खतना नहीं होता, और जब तक वे कुछ विशेष दिनों को नहीं मानते, वे मुक्ति प्राप्त हीन थे। "तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो" (गलतियों ४:१०)। इसीलिये पौलुस प्रेरित ने ऐसी कड़ी भाषा में यह पत्री लिखी, और कहा कि यह करेन के द्वारा वे वापस अपने पुराने मार्गो पर जा रहे थे। उसे डर था कि उसकी शिक्षा व्यर्थ चली जायेगी और वे सब कुछ खो देंगे। यह शैतान की पुरानी चतुराई हैं, नई नहीं। मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो, कि जो परमेश्वर मैं ने तुम्हारे लिये किया है, व्यर्थ ठहरे" (गलतियों ४:११)।

"तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलतियों ५:४)। जो लोग व्यवस्था के किसी भी भाग का पालन करने का प्रयास कर रहे हों, चाहे वह खतना, सातवाँ दिन या सब्त या बलियाँ हों-ये सब उसी व्यवस्था के अन्तर्गत आते हैं – आप अनुग्रह से गिर गये हैं, परमेश्वर के अनुग्रह से अलग किये गये हैं; और ये सेवन्थ डे एडवेंटिस्ट दण्ड के आधीन हैं। यदि आपके पास उनकी कोई भी पत्रिका या पुस्तक हो, तो उसे पूरी तरह जला डालिये, क्योंकि वे लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह से दूर ले जाने का प्रयन्त कर रहे हैं।

"मसीह ने स्वतन्त्रता के लिये हमें स्वतन्त्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जुए में फिर से न जुतो" (गलतियों ५:१)। ध्यान दीजिये, खतना, बलियों और सब्त को पौलुस दासत्व का जुआ कहता है। कठोर शब्दों में वह कहता है, "देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूँ, कि यदि खतना कराओंगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा" गलतियों ५:२)। यद्यपि लोग प्रार्थना करे या कुछ भी करें, प्रभु यीशु मसीह उनके किसी लाभ का नहीं यदि वे दासत्व के आधीन आते हैं।

फिर से गलतियों ५:३ में पौलुस कहता है, "फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूँ, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।" अर्थात, यदि आप खतना करवाते हैं, तो फिर आपको पूरी व्यवस्था माननी पड़ेगी। आप व्यवस्था का केवल एक भाग लेकर उसका पालन नहीं कर सकते। यदि आप सातवाँ दिन या खतना का पालन करना चाहते हैं, तो फिर पौलुस कहता हैं, आप पूरी व्यवस्था को मानिये, हर सप्ताह पाप बलि चढ़ाइये, दूसरी बलियाँ भी चढ़ाइये ताकि आग से पवित्र किये जाओ।

क्या आप ऐसा करने को तैय्यार हैं? या तो आप व्यवस्था के आधीन आकर गुलाम बने रहो, या उससे बाहर पूरी तरह से निकल कर विश्वास से जीवित रहो।

"तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गये हो।

क्योंकि आत्मा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।

और मसीह यीशु में न खतना, न खतना रहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। तुम तो भली भाँति दौड़ रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानों।

ऐसी सीख तुम्हारे बुलाने वाले की ओर से नहीं।

"थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है" (गलतियों ५:४-९)।

पद ४ पर ध्यान दीजिये, लोगों ने प्रारम्भ अच्छी तरह किया, परन्तु थोड़े से खमीर ने सारे गूंधे आटे को खमीर कर दिया। एक छोटी गलत शिक्षा आपके आनन्द और शान्ति को नष्ट कर सकती हैं। इन सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट लोगों को अपने घरों में मत, आने दीजिये, "वाइस-आफ-प्रोपेुसी" से रेडियों पर उनके प्रोग्राम भी मत सुनिये। वे शत्रु के लोग हैं; शैतान के दूत हैं, वे मुस्कराते हुए चेहरे के साथ या केक अथवा तस्वीर जैसी इनामें लेकर आयेंगे, परन्तु उन्हें उस रुप में भी ग्रहण मत करिये, क्योंकि वे परमेश्वर के अनुग्रह की खुशी से आपको वंचित करना चाहते हैं।

जब पौलुस को यह समाचार मिला कि गलतिया के विश्वासी व्यवस्था के आधीन, खतना एवं दिनों को मानने के द्वारा वापस जा रहे थे, तो पौलुस ने एक बच्चा जनने वाली स्त्री के समान दु:ख उठाया, "हे मेरे बालकों, जब तब तुम में मसीह का रुप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूँ" (गलतियों ४:१९)। "हे निर्बुद्धि गलतियों, किस ने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानों आँखों के साम्हने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया! मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ; कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, याश विवास के समाचार से पाया?" (गलतियों ३:१, २)।

पक्षियों को खानेवाले कुछ सर्पों की आँखे बहुत सुन्दर चमकदार होती हैं, और जब वे पक्षियों को ऊपर उड़ते देखते हैं, तो वे अपने सिर ऊपर उठाकर बिलकुल शान्त पड़े रहते है। उनकी आँखो से आकर्षित होकर, पक्षियाँ फुदकते हुए उनके पास आ जाती हैं, और जब वे उनकी पहुँच में आ जाती हैं, तब वे झपट कर उन्हें मार डालते हैं, और उनकी हड्डियों को तोड़ डालते हैं। जिस प्रकार से पक्षी सापों के द्वारा मोह लिये गये उसी तरह

गलतिया के विश्वासी गलत सिद्धान्तों और शिक्षाओं के द्वारा मोह लिये गये। सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट बहुत अच्छे लोगों की तरह दिखते हैं। वे शराब, सिगरेट अथवा सुआर का माँस नहीं खाते। वे नियमित रुप से दशमाँश देते है, जहाँ कही भी जाते हैं, अपनी बाइबल साथ ले जाते हैं, और डुबाव के बपतिस्में में विश्वास रखते हैं। इसलिये लोग बहुत प्रभावित हो जाते हैं, और आश्चर्य करते हैं, कि इनके शिक्षा में खराबी क्या है? वे इधर उधर भटकने वाले विषैले साप हैं, जो लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह से गिरा देते हैं। पौलुस ने गलतियों के विश्वासियों से कहा, कि उन्होंने आत्मा में अच्छी शुरुआत की और वे परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ रहे थे, परन्तु अब वे वापस शरीर की ओर जान चाहते थे। परमेश्वर का वचन पढ़िये। हम आप से बार बार कहते हैं, कि यदि किसी के पास पूना से आया हुआ भविष्यद्वणी की पत्रिका या और कोई कागज जो सेवन्थ डे एडेवन्टिस्ट लोगों द्वारा सम्पादित किया गया हे, तो आप उन्हें जला दें, क्योंकि वे भ्रष्ट है और शैतान के द्वारा बहुत से घरानों को नष्ट करने के काम में लाये जाते हैं। जब परमेश्वर ने आपके पापों को पहले ही माफ कर दिया है, और आप परमेश्वर के सामने विश्वास से धर्मी ठहर चुके हैं, ये सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट कहते हैं, कि सब्त के मानने और पालन करने के द्वारा आप पूर्णत: उद्धार पा सकते हैं। सारे उद्धरणों पर ध्यान दीजिये।

सब्त-बन्धुवाई की याद दिलानेवाला:

अब, यह देखिये कि किस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने सब्त दिया और अब हम क्यों उससे स्वतन्त्र हैं। “परन्तु सातवा दिन तेरे परमेश्वर यहोबा के लिये विश्राम दिन हैं, उस में न तू किसी भांति का काम काज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो; जिस से तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी नाई विश्राम करे। और इस बात को

स्मरण रखना कि मिस्त्र देश में तू आप दास था, और वहाँ से तेरा परमेश्वर यहोबा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोबा तुझे विश्राम दिन मानने की आज्ञा देता है" (व्यवस्था विवरण ५:१४ ,१५)।

परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को बताया कि, क्योंकि वे मिस्त्रियों के आधीन मिस्त्र में जड़ खरीद बन्धुवा रह चुके थे और उन्हांने झूठे देवताओं की सेवा की थी, उन्हें इस बात की याद दिलाने के लिये परमेश्वर ने उन्हें सब्त का पालन करने की आज्ञा दी। हर सब्त के दिन वे उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण उन पर आई गुलामी तथा पाप के बन्धनों का स्मरण करते थे, जिन्होंने उनके हाँथो, पावों, जीभों, कानों, आँखों और शरीरों को बाँध रखा था। व्यवस्था कमजोर थी और उसके द्वारा कोई धर्मी नहीं बना। इसी कारण से प्रभु यीशु मसीह मनुष्य बन गया और धार्मिकता को पूर्ण किया जो परमेश्वर ने व्यवस्था के द्वारा चाही थी।

"सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकी वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी" (रोमियों ८:१-३)।

जो व्यवस्था नहीं कर सकी वह प्रभु यीशु मसीह ने किया, और हमें हर बन्धनों से स्वतन्त्र किया। उसने हमारे बोझ, श्राप और दण्ड उठा लिये और हमारे लिये वह श्राप बन गया। इसलिये हम पूर्णत: स्वतन्त्र हैं, और एक नयी व्यवस्था के आधीन आते हैं – प्रभु यीशु मसीह में जीवन के आत्मा की व्यवस्था, जबकि वे लोग जो पूर्व की पुरानी व्यवस्था के आधीन आते हैं, वे पाप और मृत्यु की व्यवस्था के आधीन आते हैं।

इस प्रकार ने सब्त का दिन मानने के द्वारा इस्त्राएली लोग अपने कठोर स्वामियों के आधीन बन्धुवाई को याद करते थे, पर अब प्रभु यीशु मसीह ने बन्धुवाई की सब जंजीरों को तोड़ दिया है और हमें अपना स्वयं का विश्राम दिया है।

अनुग्रह के द्वारा-स्वतंत्रता और विश्राम

"इसलिये जबकि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिये; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उस से रहित जान पड़े। क्योंकि हमें उन्हीं की नाई सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुये वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। और हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उसने कहा, कि मैं ने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे, यद्यपि जगत की उत्पत्ती के समय से उसके काम हो चुके थे। क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं यों कहा है, कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्राम किया। और इस जगह फिर यह कहता हैं, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे। तो जब यह बात बाकी है कि कितने और है जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहिले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उस में प्रवेश न किया" (इब्रानियों ४:१-६)।

"विश्राम" उस सिद्ध शान्ति के विषय में बताता है, जो प्रभु यीशु मसीह हमें देता है। बन्धुवाई, शान्ति को दूर कर देती है। सातवें दिन परमेश्वर ने विश्राम किया, और हम उस शान्ति में प्रवेश करते हैं। मत्ती ११:२८ में हमारा प्रभु यीशु मसीह कहता हैं; "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।" धर्मी बनने के लिये हमें कुछ नहीं करना होता है, हम केवल दिल से विश्वास करते हैं, कि प्रभु यीशु मसीह हमारे लिये हमारी होमबलि, मेलबलि, अन्नबलि, तथा अपराध बलि के रुप में

मर गया, और इस प्रकार से हम धर्मी ठहरते हैं। वह हमारा बलिदान, खतना और सब्त बन गया और हम अब स्वतन्त्र हैं।

क्रूस-एक पूर्ण किया गया कार्य:

इन बातों मे दृष्टान्त हे, ये स्त्रियाँ मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीना पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते है; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानों अरब का सीना पहाड़ है, और आधुनिक यरुशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर ऊपर की यरुशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है। क्योंकि लिखा है कि हे बाँझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर, तू जिस को पीड़ाएं नहीं उठतीं गला खोलकर जय जयकार कर, क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है। हे भाइयो, हम इसहाक की नाई प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्में हुये को सताता था, वैया ही अब भी होता है। परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है? दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा। इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं, परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं" (गलतियों ४:२४-३१)।

सीना पर्वत पर दी गई व्यवस्था, बन्धुवाई, दासत्व ले आई, और लोग दोषी बन गये; परन्तु अब हम एक नयीं वाचा के आधीन आते हैं। यद्यपि इश्याइल, अब्राहम का पुत्र था, फिर भी वह और उसकी माता हाजिरा, बाहर निकाल दिये गये, और परमेश्वर ने अब्राहम को जो प्रतिज्ञा दी उसमें इन दोनों में से किसी को भी भाग न मिला। इसी तरह से वे सब जो बन्धुवाई के आधीन आते हैं, उन्हें खतने, सब्त या मनुष्यों के प्रयासों के द्वारा धर्मी बनने के प्रयत्न करने के कारण, बाहर खदेड़ दिया जायगा।

रोमन केथोलिक लोग प्रभु यीशु मसीह के पूर्ण किये गये काम पर विश्वास करके धर्मी ठहरने के बदले, उनके पादरियों द्वारा रविवार की सुबह अथवा सप्ताह के अन्य दिनों में बनाये गये प्रभु भोज में भाग लेकर धर्मी बनना चाहते हैं। ये सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट, रोमन केथोलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट लागों की तरह बाहर खदेड़ दिये जायेंगे और परमेश्वर के अंश में उनका कोई भाग नहीं होगा, क्योंकि वे बन्धुवाई के आधीन आना अधिक पसन्द करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें उद्धार दिया और हमारे प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर उद्धार के कार्य को पूर्ण किया जब उसने कहा, "पूरा हुआ"। परन्तु सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट कुछ और जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं उस पर उद्धार में। वे कहते हैं, "नहीं, प्रभु, पूरा नहीं हुआ, हम सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट है प्रभु! अवश्य है, कि हम उद्धार में सब्त को जोड़े।"

मान लीजिये की आप एक सुन्दर भवन का निर्माण करें और उसे पूर्ण कर लें, और कोई कहे यह पूर्ण नहीं है। फिरवह मिट्टी का एक टूटा बर्तन ले, उस पर डामर लगा दे, और कुछ भट्टी आकृतियाँ बना दे, और उसे भवन पर चिपका दे, उसे पूर्ण करने के लिये: आपको कैसा लगेगा? इसी प्रकार से ये सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट उद्धार के कार्य में जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा प्रभु यीशु मसीह जो पाप से अनजान था, हमारे खातिर पाप बना दिया गया। उसने हमारे पापों का पूरा दण्ड सहा, हमारा श्राप उसने उठाया, और जब वह क्रूस पर मर गया तब वह हमारे बदले में श्राप बन गया। इसलिये ही हम कहते हैं, पूरा हुआ, और अब हमें इस पर विश्वास करना है, और इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करना।

एक नई वाचा:

"सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलायेगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहाँ तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। सो हे मेरे भाइयो, तुम भी

मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं" (रोमियों ६:३, ४)।

पौलुस कहता है, यदि कोई स्त्री उसके पति कि जीवित रहते हुये विवाह करती है, तो वह व्यभिचारिणी है: परन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह किसी दूसरे से विवाह करने को स्वतंत्र है। पुरानी व्यवस्था इसी प्रकार की है। वह अब हमारे समक्ष मरी हुई है, उसका हम पर कोई दावा नहीं है, और अब हम अनुग्रह की नई व्यवस्था के साथ जीवित और विवाहित हैं। आव एक ऐसी विधवा की कल्पना कीजिये जिसने फिर से विवाह कर लिया है, और कोई उसके पास उसके पहिले पति की हड्डियाँ अपने घर में रखते देखा है? पौलुस ने कहा कि स्त्री अपने मृतक पति से स्वतंत्र है। सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट हमारे घरों में मृत हड्डियाँ लाने की चेष्टा कर रहें हैं। हम पुरानी व्यवस्था के लिये मर गये हैं, और हमारा विवाह परमेश्वर के अनुग्रह की नई व्यवस्था से कर दिया गया है। फिर हम बन्धुवाई में वापस क्यों जाएं? पौलुस प्रेरित रोम के लोगों को और दूसरी जगह के लोगों को कड़ाई के साथ चेतावनी देता है, कि गलत शिक्षा में कितना बड़ा जोखिम है।

"परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं" (रोमियों ७:६)।

हम पुरानी व्यवस्था से स्वतन्त्र हो गए हैं और नई व्यवस्था के आधीन आ गये हैं जो कि आत्मा की व्यवस्था है। आप मुझ से पूछ सकते हैं, "फिर हम दस आज्ञाओं को क्यों दोहराते हैं?" यह शैतान की चालबाजी है, यह एक प्रचलित रिवाज बन गया है, कि रविवार की सुबह भवनों में सभा के सभी सदस्य खड़े होकर तोतों की तरह इन्हें दोहराते हैं। वे दस आज्ञाएँ और प्रेरितों की शिक्षाएँ दोहराते हैं। बाइबल में कहीं भी हमें इन्हे दोहराने को नहीं कहा गया है। हम किसी आज्ञा के आधीन नहीं बरन परमेश्वर के अनुग्रह के आधीन

आ गये हैं। वे दस आज्ञाएँ और प्रेरितों की शिक्षाएँ दोहराते है। बाइबल में कहीं भी हमें इन्हें दोहराने को नहीं कहा गया है। हम किसी आज्ञा के आधीन नहीं बरन परमेश्वर के अनुग्रह के आधीन आ गये है। हमारे प्रभु ने हमें सिखाया है, कि जब अनुग्रह का आत्मा हममें आ जाता है, हम अपने आप परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी सेवा करने लगते हैं, अपने पड़ोसी से प्रेम रखने लगते हैं और व्यवस्था को पूरी करने लगते हैं, केवल दस आज्ञाओं और प्रेरितों की शिक्षाओं और प्रभु की प्रार्थना को दोहराते नहीं रहते। हम अपने आप के प्रयास से व्यवस्था को पूरी नहीं कर सकते, परन्तु प्रभु यीशु मसीह के हममें रहने के द्वारा, और उसकी आत्मा के द्वारा चलाये जाने के कारण, हम परमेश्वर की धार्मिकता को पूरी करते हैं। हम जितना अधिक पवित्र आत्मा के द्वारा चलाये जाते हैं, उतना ही अधिक हम ईश्वरीय व्यवस्था को पूर्ण करते हैं। इस प्रकार से हम सीना पर्वत के पास नहीं आये है, बरन सिय्योन पर्वत के पास आये हैं।

जीवित परमेश्वर का नगर:

"तुम तो उस पहाड़ के पास जो छुआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अन्धेरा और आन्धी के पास। और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिस के सुननेवालों ने बिनती की, कि अब हम से और बातें न कीं जाएं। क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि काई पशु भी पहाड़ को छुए, तो पत्थरवाह किया जाए। और वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और काँपता हूँ। पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरुशलेम के पास और लाखों स्वर्गदूतों ..." (इब्रानियों १२:१८-२२)।

सीना पर्वत बन्धुवाई और भय ले आया। व्यवस्था के द्वारा कोई धर्मी और सच्चा नहीं ठहरा। व्यवस्था के द्वारा लोगों ने सीखा पाप क्या था, उनके मुँह बन्द थे, वे पाप की

भयानकता को देखने लगे और व्यवस्था ने उन्हें एक स्कूल शिक्षक की नाई प्रभु यीशु मसीह के लिये तैय्यार किया। अब हम सिय्योन पर्वत के पास आ गये हैं, स्वर्गीय यरुशलेम के पाय, स्वर्गीय नगर के पास। यह हमारा स्वर्गीय ध्येय है। चाहे हम पेड़ के नीचे, ईटों से या पत्थरों से बने भवन में, तम्बु में, तारों से आच्छादित आकाश के नीचे, या नदी के किनारे कहीं भी उपासना करें, स्थानक को कोई महत्व नहीं, परन्तु लोगों के मध्य में परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति का होना महत्वपूर्ण है। जब हम आत्मा के साथ और सच्चाई के साथ परमेश्वर की उपासना करते है, वह प्रसन्न होता है। वह बड़ा भवन नहीं चाहता; वह चाहता है, कि हम उसका स्वर्गीय नगर बनायें। आजकल लोग अपने बड़े, सुन्दर और पत्थर से बने भवनों के विषय घमण्ड करते हैं, परनतु वहाँ पर प्रभु यीशु मसीह का कोई वास्तविक जीवन नहीं है।

फिर से बन्धुवाई में मत जाइये, परन्तु स्वर्गीय शहर को खोजो, जहाँ प्रभु यीशु मसीह रहता है, और जहाँ हमें उसकी वकालत का लाभ मिल सकता है; पाप के धोने के लिये उसका लहु, उसके (परमेश्वर के) दूतों की रक्षा, परमेश्वर के सन्तों की संगति मिल सकती है, और जहाँ सच्ची एकता है। यह हमारा विशेषाधिकार है। परन्तु जहाँ पर रीति रस्म, रिवाज हैं, इसका तात्पर्य है, कि शैतान ने लोगों की स्वतंत्रता और आनन्द उनसे छीन ली है।

शत्रु को और अनुमति न दें की वह आपकों धोखा दे। प्रभु यीशु ने आपको स्वतंत्र कर दिया है; स्वतंत्र बने रहिये, और परमेश्वर के एक बच्चे के जैसे उस स्वतंत्रता का आनन्द लीजिये। परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई में करिये। वापस बन्धुवाई में न जाइये, किसी औपचारिकता के दास मत बनिये, परन्तु आत्मा में रहिये। आप कह सकते है कि आप को नया जीवन प्राप्त हैं और प्रभु की बियारी में सरल तौर पर भाग लेते हैं, परन्तु जिस जीवन का आप दावा करते हैं, यदि वह जीवन नहीं जीते, और शत्रुता, तथा

ईर्ष्या का जीवन जीते हैं तो आप अपने ऊपर मृत्यु और बन्धुवाई ले आयेंगे। यह अवश्य है, कि परमेश्वर की आत्मा स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करे। काश कि प्रभु हर बन्धन को तोड़े और हमें स्वतंत्र रखे। सब उद्धरणों को सतर्कता पूर्वक पढ़िये और अपने आप देखिये कि व्यवस्था क्या हे, और अनुग्रह क्या है। तब परमेश्वर आप से जो कहता है, उसकी आज्ञा का पालन करिये।

समाप्त